International Journal of Arts, Humanities and Social Studies

ISSN Print: 2664-8652
ISSN Online: 2664-8660
Impact Factor: RJIF 8
IJAHSS 2025; 7(2): 161-165
www.socialstudiesjournal.com
Received: xx-10-2024
Accepted: xx-10-2024

प्रियंका आर्या
शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ. रेशू रानी
सहायक आचार्या, शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
प्रियंका आर्या
शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

प्रियंका आर्या, रेशू रानी

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26648652.2025.v7.i2c.294

सारांश
प्रस्तुत शोध सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन पर किया गया है। शोध के निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति हेतु आंकड़े एकत्रित करने के लिए मेरठ जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों को इस अध्ययन की जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है एवं प्रतिदर्श के रूप में यादच्छिक विधि से मेरठ जिले के 20 विद्यालयों 10 सरकारी तथा 10 गैर सरकारी में प्रत्येक विद्यालय से 03 महिला शिक्षकों तथा 03 पुरुष शिक्षकों को न्यायदर्श के रूप में चयनित किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन मापने के लिए डॉ. शुभ्रा मंगल द्वारा स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है तथा प्राप्त परिणामों को सांख्यिकी विश्लेषण 'टी' परीक्षण द्वारा किया गया। जिसमें सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। तथा परिकल्पना संख्या 4.3 सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है।

कुटशब्द: संवेगात्मक बुद्धि, सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षक एवं महिला शिक्षक

प्रस्तावना
नवजात शिशु जन्म के समय ने तो सामाजिक और न ही असामाजिक होता है शिशु अवस्था में न कोई मित्र और न हीं शत्रु होता है उसे समाज के रीति रिवाज एवं परंपराओं का भी कुछ ज्ञान नहीं होता है इस अवस्था में उसे किसी आदर्श मूल्य को प्राप्त करने की जिज्ञासा भी नहीं पाई जाती परंतु जैसे-जैसे वह बड़ा होता है उसमें शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रभाव भी उस पर देखा जाता है। जिस प्रभाव के फलस्वरुप उसमें शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता है तो दूसरी और उसमें सामाजिक भावना का भी विकास होने लगता है। शिक्षा मनुष्य में जीवन पर्यटन चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा का उद्देश्य वर्तमान सभ्यता एवं संस्कृति की सुरक्षा तथा उसका विकास करना है। शिक्षा के द्वारा ही बालकों में संस्कृति के प्रति सम्मान एवं राष्ट्र के प्रति प्रेम की भावना जागृत होती है। तथा बालकों में मानसिक, शारीरिक, चारित्रिक तथा संवेगात्मक गुणों का विकास कर उनको जीविकापार्जन में निपुण एवं राष्ट्र प्रेम की भावना को जागृत करने में शिक्षा की अहम भूमिका होती है। प्लाटों ने शिक्षा को वंचित आदतों के विकास की एक प्रक्रिया माना है। प्लूटो के अनुसार "शिक्षा के द्वारा ही बालक सत्कर्म की ओर आकर्षित होता है। बालक शिक्षा के द्वारा जितने गुणों को अर्जित करेगा समाज में उतनी उन्नति होगी" शिक्षा के द्वारा ही मानव के चिंतन व्यवहार तथा चरित्र में परिक्रष्ट दृष्टिकोण का विकास किया जा सकता है जिसके द्वारा मानव में एक ही ऐसी पृष्ठभूमि तैयार होगी जो किसी कार्य को तर्कसंगत परिणाम द्वारा परंपागत दृष्टिकोण को बदलने के लिए अभिप्रेरणा प्रदान करती हैं। प्रत्येक मानव सभ्यता के लिए शिक्षा ही एक ऐसी आधारभूत आवश्यकता मानी जाती है क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही मानव में उनके काम के प्रति तार्किकता, संबद्धता, सोच में वैज्ञानिकता और प्रयोगों में सृजनात्मकता का विकास करती है। जिसके द्वारा वह अपने समाज का एक उपयोगी नागरिक बन सकता है। इस कथन को डी . एम.कोठारी महोदय ने अपने प्रतिवेदन में कुछ इस तरह अंकित किया है-" देश की आकांक्षाओं के प्राप्ति उसके समस्त जनों के ज्ञान कौशल हितों और मूल्य में निहित है यदि बिना किसी हिंसात्मा क्रांति के बड़े पैमाने पर परिवर्तन करना है तो केवल एक ही स्थान है और वह शिक्षा है शिक्षा का कार्य समस्त मानव जाति का कल्याण करना है।

जिससे वह मानव की केवल स्मरण शक्ति, कल्पना, सामाजिकता, आत्मा तथा शरीर का विकास नहीं करती बल्कि उसके व्यक्तित्व का भी विकास करती है।

फ्रोबेल के अनुसार"शिक्षा में प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक की शक्तियां बाहर की ओर प्रकट होती है"।

महात्मा गांधी जी के अनुसार"शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक एवं मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्ति के विकास से है"।

शिक्षा हमारे समाज का आधार है और बच्चों के भविष्य को आकार देने का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। प्राथमिक शिक्षा वह स्तर है जहां बच्चों को बुनियादी रखा जाता है इस स्तर पर शिक्षक ने केवल ज्ञान का प्रसार करते हैं, बल्कि वह बच्चों के व्यक्तित्व, सोचनेकी क्षमता, और सामाजिक समझ को भी आकार देते हैं। प्राथमिक शिक्षकों की भूमिका इसलिए और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि वे न केवल पढ़ाई सीखते हैं बल्कि छात्रों के जीवन में मूलभूत आदतों और दृष्टिकोण को विकसित करने मदद करते हैं।

शिक्षक की सफलता और उसके शिक्षक की गुणवत्ता केवल उनके ज्ञान एवं शिक्षण के तरीकों पर निर्भर नहीं करती। शिक्षक की संवेगात्मक बुद्धि भी शिक्षक के परिणाम को बहुत अधिक प्रभावित करती है। संवेगात्मक बुद्धि का अर्थ है कि किसी व्यक्ति की वह क्षमता जिससे वह अपने भावनाओं को समझता है, नियंत्रित करता है, और दूसरे की भावनाओं के प्रति सहानुभूति और संवेदनशीलता दिखता है यह विशेष गुण शिक्षकों के लिए अनिवार्य है, क्योंकि इससे वह छात्रों की जरूरत को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं और उन्हें सही मार्गदर्शन दे पाते हैं।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षा देने वाले शिक्षक दो प्रकार के होते हैं- सरकारी और गैर-सरकारी। सरकारी शिक्षक अक्सर स्थायी नौकरी और संसाधनों की उपलब्धता का लाभ उठाते हैं, जबकि गैर सरकारी शिक्षक सीमित संसाधनों को अधिक कार्य दबाव के बावजूद शिक्षण में अपनी भूमिका निभाते हैं। इन दोनों प्रकार के शिक्षकों के काम करने के तरीके, उनके संसाधन, और उनकी भावनात्मक प्रतिक्रिया में अंतर हो सकता है यह अंतर उनके शिक्षक की गुणवत्ता और छात्रों पर पड़ने वाले प्रभाव को भी प्रभावित करती है।

सरकारी शिक्षक आमतौर पर अधिक संगठित प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं जबकि गैर सरकारी शिक्षकों को अधिक कठिन परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। इससे यह सवाल उठता है कि इन दोनों प्रकार के शिक्षकों की संवेगात्मक की संवेगात्मक बुद्धि समान होती है या उनके कार्य परिवेश के अनुसार भिन्न होती है। संवेगात्मक बुद्धि की इस भिन्नता का अध्ययन करना इसलिए जरूरी हो जाता है ताकि यह समझा जा सके कि इन अंतरों का उनके शिक्षक परिणामों और छात्रों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

शिक्षक केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं है। यह छात्रों के व्यक्तित्व और मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। एक शिक्षक जिसकी संवेगात्मक बुद्धि उच्च होती है, वह अपने छात्रों की भावनात्मक और शैक्षणिक जरूरत को बेहतर ढंग से समझ सकता है ऐसे शिक्षक न केवल छात्र को प्रेरित करते हैं, बल्कि उनकी शिक्षा को एक सकारात्मक अनुभव में बदलने का प्रयास करते हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि इन शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि उनके पेशेवर अनुभव, कार्य दबाव, और संसाधनों की उपलब्धता से कैसे प्रभावित होती है। इस अध्ययन से यह भी पता लगाया जा सकता है कि शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर उनके शिक्षण पद्धति और छात्रों के प्रदर्शन पर किस प्रकार प्रभाव डालता है।

संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि का अर्थ है व्यक्ति की वह क्षमता जिससे वह ने केवल अपनी भावनाओं को समझ और नियंत्रित कर सकता है बल्कि दूसरों की भावना को भी समझ सकता है और उनके प्रति संवेदनशील रह सकता है जब एक शिक्षक अपने संवेगात्मक बुद्धि का सही उपयोग करता है तो वह छात्रों की समस्याओं को बेहतर तरीके से समझ पाता है उनके साथ एक सा अनुभूति पूर्ण संबंध बना पाता है और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करता है। (पंचोली, 2020) "लेकिन बुद्धि के बहू पहलुओं का विस्तार से अध्ययन करने का श्रेय हार्वर्ड गार्डन को जाता है। जिन्होंने न्यूरो मनोवैज्ञानिक के क्षेत्र में किए गए अध्ययन के आधार पर 1983 में एक नई बहू बुद्धि सिद्धांत का प्रतिपादन किया। हार्वर्ड गार्डन ने अपने पुस्तक" फ्रेम्स आफं माइंड द थ्योरी ऑफ़ मल्टीप्ल इंटेलिजेंस "में बुद्धि के साथ प्रकारों का वर्णन किया। उनके अनुसार बुद्धि के साथ कारक पूर्णतया अनुवांशिकता पर आधारित नहीं होती बल्कि यह किसी सामाजिक या भौतिक वातावरण एवं किसी विशेष प्रकार के प्रशिक्षण द्वारा भी विकसित किया जा सकते हैं।

हावर्ड गार्डनर के अनुसार:"बुद्धि की विशिष्ट संस्कृतिक संदर्भ में जैविक प्रवृत्तियां और सीखने के अवसरों के बीच में होने वाला अंतः क्रिया के रूप में है"(मानव 2017) इसके पश्चाताप काल एल्बेस्टर ने बुद्धि की 6 प्राथमिक आयाम बताएं जिसके अंतर्गत अमूर्त बुद्धि, सामाजिक बुद्धि, प्रयोगात्मक बुद्धि, संवेगात्मक बुद्धि, सौंदर्यात्मक बुद्धि तथा गतिबोधक बुद्धि आती है। कुछ मनोवैज्ञानिक के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि में सामाजिक बुद्धि है जो हार्वर्ड गार्डन के द्वारा बताए गए बुद्धि के प्रकारों में से एक अन्तरवैयक्तिक बुद्धि के समतुल्य है। जो मानव को अन्य लोगों के भावों, संवेग, अभिप्रेरणों तथा आवश्यकता को समझने के योग्य बनाती है। बुद्धि का विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के द्वारा विश्लेषण करने के पश्चात तथ्य सामने आए हैं। कि मानवीय व्यवहार कार्यों परिणाम बुद्धि के साथ-साथ संवेगों से भी नियंत्रित एवं नियमित होते हैं। इसके लिए हम लोगों को यह समझना भी अत्यंत आवश्यक है इस दृष्टिकोण से संवेग की भी सामान्य विवेचन प्रस्तुत की जा रही है।

अध्ययन की आवश्यकता: शिक्षा में शिक्षक का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षक के स्तर पर यह वह चरण होता है जहां छात्र बुनियादी ज्ञान प्राप्त करते हैं, बल्कि उनके मानसिक और भावनात्मक विकास की भी नींव रखी जाती है। इस स्तर पर शिक्षक की भूमिका केवल पाठ्यक्रम को पढ़ने तक सीमित नहीं होती बल्कि वह छात्रों की भावनाओं को समझने और उनके साथ गहरा संबंध बनाने में भी सक्षम होने चाहिए। इस संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि का महत्व और भी बढ़ जाता है संवेगात्मक बुद्धि का अर्थ व्यक्ति की क्षमता जिससे वह न केवल अपनी भावनाओं को समझ और नियंत्रित कर सकता है, बल्कि दूसरों की भावनाओं को समझ सके और उनके प्रति संवेदनशील रह सके जब एक शिक्षक अपनी संवेगात्मक बुद्धि का सही उपयोग करता है, तो वह छात्रों की समस्याओं को बेहतर तरीके से समझ पाता है, उनके साथ एक सहानुभूति पूर्ण संबंध बना पाता है, और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करता है। इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों के काम करने के वातावरण और चुनौतियों में बहुत अंतर होता है। सरकारी शिक्षकों के पास आमतौर पर स्थिरता, संसाधनों की उपलब्धता, और प्रशिक्षण के अधिक अवसर होते हैं। इसके विपरीत, गैर सरकारी शिक्षक सीमित संसाधनों अधिक कार्यभार और अस्थिर नौकरी की परिस्थितियों में काम करते हैं। ऐसे में यह जानना जरूरी है कि इन विभिन्न परिस्थितियों का उनकी संवेगात्मक बुद्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है।

संबंधित शोध सर्वेक्षण: सुषमा एवं सरेखा (2014) में "ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय छात्रों में अभिभावक प्रबंध बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध के अध्ययन" में पाया गया कि ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय छात्रों में अभिभावक प्रबंध एवं संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक संबंध है ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय छात्रों में अभिभावक प्रबंध एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध है।

कौर, दलजीत (2015)"ने प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि और आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के संबंध में शैक्षिक उपलब्धि और परोपकारिता का एक अध्ययन "पर शोध कार्यक्रम निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

गुप्ता (2016)"विद्यालयों विविधता के संदर्भ में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं विज्ञान विषय का उपलब्धि का अध्ययन" किया यह पाया कि केंद्रीय में राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में समग्र रूप में कोई अंतर नहीं है संवेगात्मक बुद्धि के आयामों अन्यथा व्यक्तित्व जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया है प्राथमिक विद्यालय के छात्र छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि में समग्र में सार्थक अंतर है।

समस्या कथन: सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

उद्देश्य

सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों के संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंदर नहीं है।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत अध्ययन सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों के संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन में अनुसंधान विधि के रूप में विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है इस कारण शोधार्थीनी ने इस विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण विधि के आधार पर ही आंकड़े को एकत्रित किया है। प्रस्तुत शोध में एकल स्थिर चर अभिकल्प का प्रयोग किया गया।आंकड़ों के परीक्षण हेतु मानक विचलन, मध्यमान तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण तथाविवेचन

उद्देश्य (1) सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों के संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना (1) सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमन

यह अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले तक सीमित है।

इस शोध अध्ययन में सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों को शामिल किया गया हैं।

आँकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या

तालिका 1: सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

	सरकारी विद्यालय के शिक्षक	60	उच्च स्तर	322.23	5.37		
अभिविन्यास के प्रति जागरूकता	गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षक	60	अति उच्च स्तर	200.46	3.34	0.212	असार्थक
	सरकारी विद्यालय के शिक्षक	60	उच्च स्तर	177.13	2.95		
अंतर्वैयक्तिक प्रबंधन	गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षक	60	अति उच्च स्तर	172.53	2.87	0.843	असार्थक
	सरकारी विद्यालय के शिक्षक	60	अति उच्च स्तर	113.66	1.89		
पारस्परिक प्रबंधन	गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षक	60	उच्च स्तर	269.80	4.49	0.167	असार्थक
	सरकारी विद्यालय के शिक्षक	60	औसत	236.66	3.94		
योग	गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षक	60	अति उच्च स्तर	991.02	16.51	0.053	असार्थक
	सरकारी विद्यालय के शिक्षक	60	उच्च स्तर	849.7	14.16		

df=118 .05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.98

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट होता है की सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के आयामों-अपने एवं दूसरों के प्रतिजागरूकता, अभिविन्यास के प्रतिजागरूकता, अन्त्वे अर्यक्तिकप्रबंधन एवं पारस्परिक प्रबंधन चार भागों में बाटा गया है सरकारी शिक्षकों के आयामों के प्राप्तांको का ओसत मान अपने एवं दूसरों के प्रतिजागरूकता, एवं अभिविन्यास के प्रतिजागरूकता 322.23, 177.13 एवं कुल सरकारी शिक्षकों का ओसत मान 849.7 प्राप्त हुआ, जो मेनुअल की तालिका के आधार पर अपने एवं दूसरों के प्रतिजागरूकता, अभिविन्यास के प्रतिजागरूकता, एवं कुल सरकारी शिक्षकों के प्राप्तांको के ओसत मान के अनुसार स्तर उच्च स्तर का है साथ ही

अन्त्वे अर्यक्तिकप्रबंधन के प्राप्तांक का ओसत मान-113.66 प्राप्त हुआ जो ओसत मान के अनुसार स्तर अति उच्च स्तर का है। तथा पारस्परिक प्रबंधन के प्राप्तांक का ओसत मान-236.66 है जो प्राप्तांक के ओसत मान के अनुसार स्तर ओसत स्तर का है।

गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के आयामों-अपने एवं दूसरों के प्रतिजागरूकता, अभिविन्यास के प्रतिजागरूकता, एवं अन्त्वे अर्यक्तिकप्रबंधन के प्राप्तांको का ओसत मान-348.23, 200.46, 172.53 एवं कुल गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का ओसत मान 991.02 प्राप्त हुआ जो प्राप्तांको के ओसत मान के अनुसार अति उच्च स्तर का है।

पारस्परिक प्रबंधन के प्राप्तांक का ओसत मान-269.80 प्राप्त हुआ जो प्राप्तांक के ओसत मान के अनुसार उच्च स्तर का है।

सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के आयामों-अपने एवं दूसरों के प्रतिजागरूकता, अभिविन्यास के प्रतिजागरूकता, अन्त्वे अर्यक्तिकप्रबंधन एवं पारस्परिक प्रबंधन पर प्राप्त आंकड़ों के मध्यमान के बीच टीमान 0.075, 0.212, 0.84, 0.167 प्राप्त हुए जो की स्वतंत्रता अंश 118 के सार्थकता स्तर .05 के सारणी मान 1.98 से कम है जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के आयामों में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 1 के पुनरावलोकन करने पर विदित होता है कि सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि

की कुल संवेगात्मकबुद्धि मापनी पर प्राप्त आंकड़ों के मध्यमान के बीच टीमान 0.053 प्राप्त हुए जो की स्वतंत्रता अंश 118 के सार्थकता स्तर .o5 के सारणी मान 1.98 से कम है। जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि लक्षित समूहों के कुल संवेगात्मक बुद्धि का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के पक्षो में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना संख्या 3 सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है।

उद्देश्य पर आधारित परिणाम

उद्देश्य के विश्लेषण के उपरांत प्राप्त परिणामों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन के विश्लेषण करते हुए टी प्रतांक के आधार पर परिणाम की जाँच की गयी है जिसमे पाया गया है सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के पक्षो में सार्थक अंतर नहीं है।

कुल सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के पक्षो में भी सार्थक अंतर नहीं है।

सरकारी शिक्षकों के आयामों-अपने एवं दूसरों के प्रतिजागरूकता, अभिविन्यास के प्रतिजागरूकता के प्राप्तांको के ओसत मान-के अनुसार स्तर उच्चस्तर का है साथ ही अन्य आयामों अंतरव्यक्तित्व प्रबंधन के प्राप्तांक के औसत मान के अनुसार स्तर अति उच्च स्तर का है। तथा पारस्परिक प्रबंधन के प्राप्तांक के औसत मान के अनुसार स्तर औसत स्तर का है। तथा कुल सरकारी शिक्षकों के प्राप्तांको के औसत मान के अनुसार स्तर उच्च स्तर का है

गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के आयामों- - अपने एवं दूसरों के प्रति जागरूकता, अभिविन्यास के प्रतिजागरूकता, एवं अंतरव्यक्तित्व प्रबंधन के प्राप्तांको के औसत मान के अनुसार स्तर अति उच्च स्तर का है । तथा अन्य आयाम पारस्परिक प्रबंधन के प्राप्तांक का औसत मान के अनुसार स्तर उच्च स्तर का है। एवं कुल गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के औसत मान के प्राप्तांको के औसत मान के अनुसार अति उच्च स्तर का है।

अध्ययन निष्कर्ष

सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के आयामों के प्राप्तांको के ओसतमान केअनुसार स्तर ओसत, उच्च एवं अति उच्चस्तर, वाले सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के आयामों में सार्थक अंतर नहीं है अतः परिकल्पना संख्या को स्वीकृत किया जाता है। जिसका संभावित कारण यह हो सकता है की सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के आयामों – अपने प्रति जागरूकता, दूसरों के प्रति जागरूकता, अन्त वैयक्तिक प्रबंधन एवं पारस्परिक प्रबंधन – के प्राप्तांकों के औसतमानों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह पाया गया कि औसत, उच्च एवं अतिउच्चस्तरों पर दोनों समूहों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पनाकि "सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है" स्वीकृत की जाती है।

इस परिणाम का संभावित कारण यह हो सकता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षक समान सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि से आते हैं, समान प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं तथा समान प्रकार की व्यावसायिक अपेक्षाओं एवं दायित्वों के अंतर्गत कार्य करते हैं। इस कारण उनकी संवेगात्मक बुद्धि का विकास भी लगभग समान स्तर पर होता है।

शैक्षिकसुझाव.

1. B.Ed., D.El.Ed. एवं इन-सर्विसट्रेनिंग कार्यक्रमों में संवेगात्मक बुद्धि के आयामों (आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, भावनात्मकनियंत्रण, पारस्परिक संबंध) से संबंधित विशेष सत्र शामिल किए जाने चाहिए।
2. सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों में समय-समय पर वर्कशॉप/सेमिनार आयोजित किए जाएँ, जिनमें शिक्षकों को तनाव-प्रबंधन, भावनात्मक नियंत्रण एवं सहयोगात्मक व्यवहार से संबंधित कौशल विकसित करने के अवसर मिलें।
3. शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाए कि वे विद्यार्थियों की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझकर सहानुभूति पूर्णदृष्टिकोण अपनाएँ। इस से न केवल बच्चों का सर्वांगीण विकास होगा बल्कि शिक्षक की दूसरों के प्रतिजागरूकता भी और अधिक मजबूत होगी।
4. सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के बीच सहभागिता कार्यक्रम (जैसे अनुभव-विनिमय, साझाप्रशिक्षण, संयुक्त कार्यशाला) आयोजित किए जाएँ, ताकि वे एक-दूसरे के अनुभवों और तरीकों से सीख सकें।
5. विद्यालय प्रबंधन को चाहिए कि वे शिक्षकों की संवेगात्मक क्षमताओं का समय-समय पर मूल्यांकन करें और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शिक्षकों को उचित सम्मान एवं प्रोत्साहन प्रदान करें। इस से शिक्षकों में आत्म-प्रेरणा और पेशेवर संतुष्टि की भावना प्रबल होगी।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि को प्रोत्साहित करने हेतु शिक्षकों को उपयुक्त प्रशिक्षण, सहयोगी वातावरण, निरंतर परामर्श एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता है। इस सेनकेवल शिक्षकों का व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास होगा, बल्कि विद्यार्थियों की शैक्षिक गुणवत्ता एवं विद्यालय की समग्रप्रगति भी सुनिश्चित होगी।

शै क्षक निहितार्थ

- अनुसंधान के क्षेत्र विस्तृत न्यादर्श तथा भिन्न भिन्न परीक्षण अनुसूची के आधार पर संपुर्ण प्रांत मे अनुसंधान किया जा सकता है जिससे किशोध प्रबंधो के फलों की प्रामाणिकता का परीक्षण किया जा सके।
- प्रस्तुत अध्ययन में सरकारी एवं गैरसरकारी प्राथमिक महिला एवं पुरुष शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का सम्मिलित रूप से अध्ययन किया गया है। भविष्य में छात्र एव छात्राओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं माध्यमिक विद्यालयों की महिला एवं पुरुष शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर का अलग अलग अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुतशोध कार्य केवल शिक्षको पर किया गया है। भविष्य मे इसी प्रकार का अध्ययन स्नातक विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध कार्य की तरह अध्ययन का विषय संकाय वर्ग पर आधारित हो कर भी हो सकता है। इसी प्रकार का अध्ययन प्रशिक्षण महाविद्यालयो पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन सरकारी एवं गैरसरकारी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि पर किया गया है अग्रमी शोध हेतु

अपसारी चिंतन एवं अभिसारी चिंतन पर भी किया जा सकता है ।

संदर्भ-ग्रन्थ सूची

1. कौर, दलजीत (2015) उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और आध्यात्मिकता बुद्धिमत्ता के संबंध में शैक्षिक उपलब्धि और परोपकारिता https://hdl.handle.net/10603/375595
2. गुप्ता, जे. (2016) विदा्यालयी विविधता के संदर्भ में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की संवेगात्मक बुद्धि में विज्ञान विषय का उपलब्धि का अध्ययन, शोध ग्रंथ, शिक्षा संकाय, वनस्थली, वनस्थली राजस्थान
3. सुषमा, एच. सुरेखा, श्रिरसागर (2014). ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालय छात्रोंओं मेंअभिभावक प्रतिबन्ध, संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन, गोल्डन रिसर्च थॉट वॉल्यूम 4, www.aygrt, isrj, org